भीडीने मलियो बंने उछरंगे, भाजी हैडानी हाम।
इंद्रावती कहे केसरबाई, वाले पूरण कीधां मन काम।। १५ ।।

बड़े हर्ष के साथ दोनों गले लगकर मिलीं और मन के मैल को दूर किया। अब श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, हे केसरबाई! वालाजी ने हमारी मनोकामनाएं पूरी की हैं।

॥ प्रकरण ॥ ३९ ॥ चौपाई ॥ ७६१ ॥

राग केदारो छंद

छेडो न छटके, अंग न अटके, भरे पांउं चटके, मानवंती मटके।। १ ।।

रास रामत में साड़ी का पल्ला कहीं खुल न जाए। कोई अंग अटक न जाए। पांव से चटकनी चाल से चलकर मानवन्ती (मानिनी) सखियां मटक-मटक कर रास खेलती हैं।

लिए रंग लटके, घुटावे अधुर घटके, वली वली सटके।
खांत घणी खटके, रमवा रंगे रास री।। २ ।।

लटक के साथ आनन्द करती हैं। अधर का रस पिलाती हैं। बार-बार खिसक जाती हैं। बड़ी प्रबल चाह रास खेलने की होती जाती है।

रमती रास कामनी, जामती चंद्र जामनी।
मली वल्लभे माननी, भलंती रंगे भामनी।। ३ ।।

कामिनी सखियां रास खेलती हैं। चन्द्रमा की चांदनी रात स्थिर हो जाती है और मानिनी सखियां प्रियतम से मिलती हैं तथा आपस में एक-दूसरे से मिलती हैं।

स्यामाजी संगे स्यामनी, बांहोंडी कण्ठे कामनी।
ताणती अंगे आमनी, मुख बीडी सोहे पाननी।
एम रमत सकल साथ री।। ४ ।।

श्यामाजी श्री श्याम के गले में हाथ डालकर अपनी तरफ खींचती हैं। मुख में पान का बीड़ा है। इस तरह से सब सखियां खेल रही हैं।

मारो साथ रमे रे सोहामणो, कांई रामत रमे रंग।
वालाजीसुं वातो, करे अख्यातो, उलट भीडे अंग।। ५ ।।

सब सखियां बड़े आनन्द के साथ सुहावने ढंग से रामत खेल रही हैं। वालाजी से बेशुमार बातें करती हैं और अंग में उमंग भरकर वालाजी से चिपट जाती हैं।

बांहोडी वाले भूखण संभाले, रखे खूंचे कोई नंग।
लिए बाथो वालाजी संघातो, उनमद बल अनंग।। ६ ।।

अपने आभूषण संभाल कर वालाजी के गले में बांह डाले हैं, ताकि कोई नग चुभ न जाए। वालाजी के साथ मस्ती तथा उन्मद अंगों से कोहली भरती हैं।

छटके रमे पाखल भमे, रामत न करे भंग।
छेलाइए छेके अंग वसेके, सखी सर्वे सुचंग।। ७ ।।

फिर अलग होकर भमरी फिरती हैं तो भी खेल में कोई रुकावट नहीं आती है। सब सखियां सावधान हैं–विशेषकर चतुराई के साथ कूदने में।

Nijanand App

केटलीक सुन्दरी उलट भरी, आवी वालाजीने पास।
उमंग आणे आप वखाणे, विरह विनता गयो नास।। ८ ।।

कुछ सखियां उमंग भरकर वालाजी के पास आती हैं और उमंग में ही बोलती हैं, अब हमारे विरह का दुःख मिट गया है।

गीत गाए रंग थाए, विविध पर विलास।
जुवती जोडे एकठी दोडे, मारा वालाजीसुं करवा हांस।। ९ ।।

गीत गाती हैं। तरह-तरह से विलास के आनन्द हो रहे हैं। युवतियां जोड़ी-जोड़ी करके वालाजी से हंसी करने के लिए दौड़ती हैं।

वालैए विमासी अंग उलासी, देह धरया अनेक।
सखियो सघली जुजवी मली, मारा वालाजीसुं रमे विसेक। ।१० ।।

वालाजी भी उमंग के साथ विचार करके अनेक देह धारण करते हैं। फिर सखियां भी एक-एक गोपी, एक-एक कान्हा के रूप में विशेष रामतें खेलती हैं।

अंगडा वाले नेंणां चाले, उपजावे रंग रेल।
बोले बंगे आवे रंगे, जाणे पेहेले भणियो पेस।। ११ ।।

वे अंग को मोड़ती हैं। आखें चलाकर आनन्द बढ़ाती हैं। आनन्द में विभोर होकर अटपटे वचन बोलती हैं। ऐसा लगता है कि मानो इस कला को पहले सीखकर आई हैं।

अति उछरंगे वाध्यो संगे, उमंग अंग न माय।
वालाजीनी बांहे कंठ वलाय, रमतां तानी जाय।। १२ ।।

वालाजी के गले में हाथ डालकर बड़ी उमंग, जो उनके मन में समाती नहीं है, के साथ अपनी ओर वालाजी को खींच ले जाती हैं।

बांहोंडी झाली वनमां घाली, रामत रमे अति दाय।
वनमां विगते जुजवी जुगते, रंग मन इछा थाय।। १३ ।।

बांह पकड़कर वन में ले जाकर बड़ी अदाओं के साथ रामत खेलती हैं। मन में जैसी इच्छा होती है, वन में उसी प्रकार की अलग-अलग रामतें खेलती हैं।

एक निरत करे फेरी फरे, छेक वाले तेणे ताय।
एक दिए ठेक वली वसेक, रेत उडाडे पाय।। १४ ।।

एक जोड़ी नृत्य करती है। एक जोड़ी फेरी फिरती है। एक जोड़ी उसी समय कूदती है। एक जोड़ी विचित्र ढंग से धकेलते हुए पांव से रेत उड़ाती है।

एक घूमे घूमरडे कोइक दौडे, वचन गाए रसाल।
एक लिए ताली दिए वाली, साम सामी पडताल।। १५ ।।

एक जोड़ी घुमडले की, एक जोड़ी दौड़ने की, एक जोड़ी रस भरे वचन गाने की, एक जोड़ी ताली सामने लेने और देने की तथा एक जोड़ी अपने सामने आकर पड़ताल की रामत खेलती है।

Nijanand App

एक चढे वने इछा गमे, हींचे हिचोले डाल।
एक कोणियां रमे गाए गमे, प्रेमतणी दिए गाल।। १६ ।।

एक जोड़ी इच्छानुसार वन में पेड़ों पर चढ़कर डालियों से झूमती है। एक जोड़ी कोहनियां रमती है और प्रेम भरी गालियां देकर गाती है।

एक फरे फेरी कर धरी, बांहोंडी कंठ आधार।
एक फूंदडी फरे रामत करे, रंग थाय रसाल।। १७ ।।

एक जोड़ी कन्धे पर हाथ रखकर फेरी फिरती है और वालाजी के गले में बाहें डालती है। एक जोड़ी फूंदड़ी की रामत करती है। इससे आनन्द बढ़ जाता है।

मोरलिया नाचे रंग राचे, सब्द करे टहुंकार।
वांदरडा पाय ऊभा थाय, लिए गुलाटो सार।। १८ ।।

एक जोड़ी मोर बनकर नाचती है तथा मोर की बोली बोलती है। कुछ सखियां बन्दर बनती हैं और गुलाटियां लगाती हैं।

पसु पंखी वासे मन उलासे, आनंदियो अपार।
वन कुलांभे वेलो आवे, फूलडा करे बेहेकार।। १९ ।।

पशु-पक्षी उल्लास भरे मन से पीछे खड़े अपार आनन्द ले रहे हैं। वन में बेलें वृक्षों पर लिपटी हैं। उनके फूलों से वन महक रहा है।

चांदलियो तेंजे जुए हेजे, नीचो आवी निरधार।
जल जमुना ना वाध्यां घणां, आघा न वहे लगार।। २० ।।

चन्द्रमा तेजी से नीचे आकर बड़े प्यार से रास देखता है। यमुनाजी के जल का बहाव भी रुक गया है।

पडछंदा बाजे भोम विराजे, पडताले धमकार।
सघली संगे उमंग अंगे, अजब रमे आधार।। २१ ।।

पांव की पड़ताल से धमक की आवाज धरती पर घोष करती है। इस तरह सब सखियों के साथ उमंग भरकर निराली अदा (विचित्र मुद्राओं से युक्त) से वालाजी खेलते हैं।

भूखण बाजे धरणी गाजे, वृंदावन हो हो कार।
अमृत वा वाय लहेरों लिए वनराय, अंग उपजावे करार।। २२ ।।

आभूषण बजते हैं, जिससे धरती पर गर्जना होती है तथा सखियों की 'हो-हो की आवाज' वृन्दावन में गूंज रही है। अमृतमयी हवा की लहरों से वृन्दावन झूमकर अंग में आनन्द उपजाता है।

एम केटलीक भांते रमियां खांते, रामत रंग अपार।
कहे इंद्रावती एणी पेरे लीजे, वालो सुख तणो सिरदार।। २३ ।।

इस प्रकार से बड़ी चाहना के साथ अनेक तरह से बेशुमार रामतें खेलते हैं। श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि ऐसे सुख देने वाले वालाजी सुख के सरदार (मालिक) हैं।

।। प्रकरण ।। ४० ।। चौपाई ।। ७८४ ।।

Nijanand App